

सामाजिक विज्ञान

भारत और समकालीन विश्व-2

कक्षा 10 के लिए इतिहास की पाठ्यपुस्तक



राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण

अप्रैल 2007 चैत्र 1929

पुनर्मुद्रण

फरवरी 2008 माघ 1929

जनवरी 2009 माघ 1930

जनवरी 2010 माघ 1931

जनवरी 2011 माघ 1932

जनवरी 2012 माघ 1933

जनवरी 2013 माघ 1934

नवंबर 2013 कार्तिक 1935

दिसंबर 2014 पौष 1936

फरवरी 2016 माघ 1937

दिसंबर 2016 पौष 1938

दिसंबर 2017 पौष 1939

PD 80T RSP

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2007

₹ 125.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा देवटैक पब्लिशर्स एवं प्रिंटर्स प्रा. लि., 14/3 बोलटोन कम्पाउंड, मथुरा रोड, फरीदाबाद (हरियाणा) द्वारा मुद्रित।

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिना इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन सी ई आर टी के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैपस

श्री अरविंद मार्ग

नयी दिल्ली 110 016

फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सप्रेसवे, होस्टेकेरे
बनाशंकरा III स्टेज
बेंगलुरु 560 085

फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन

डाकघर नवजीवन

अहमदाबाद 380 014

फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैपस

निकट: धनकल बस स्टॉप पनहटी

कोलकाता 700 114

फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लेक्स

मालीगांव

गुवाहाटी 781 021

फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : एम. सिराज अनवर

मुख्य संपादक : श्वेता उप्पल

मुख्य व्यापार प्रबंधक : गौतम गांगुली

मुख्य उत्पादन अधिकारी : अरुण चितकारा
(प्रभारी)

संपादक : नरेश यादव

उत्पादन सहायक : ओम प्रकाश

आवरण, सज्जा एवं चित्र

पार्थिव शाह

सहयोगी— श्रवणी राय तथा शिवराज पात्र

नक्शानवीसी

के. वर्गीस

आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नयी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास हैं। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल-केंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफी दूर तक ले जाएंगे।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और अपने अनुभव पर विचार करने का अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह, समय और आज़ादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना-सामग्री से जुड़कर और जूझकर नए ज्ञान का सृजन करते हैं। शिक्षा के विविध साधनों व स्रोतों की अनदेखी किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सर्जना और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें।

ये उद्देश्य स्कूल की दैनिक जिंदगी और कार्यशैली में काफी फेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय-सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है जितना वार्षिक कैलेंडर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हकीकत बन सके। शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव बनाने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती है। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और गहराने के यत्न में यह पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और विस्मय, छोटे समूहों में बातचीत एवं बहस और हाथ से की जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देती है।

एन.सी.ई.आर.टी. इस पुस्तक की रचना के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है। परिषद् सामाजिक विज्ञान सलाहकार समूह के अध्यक्ष, प्रोफ़ेसर हरि वासुदेवन, इतिहास विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता एवं इतिहास पाठ्यपुस्तक समिति के मुख्य सलाहकार, प्रोफ़ेसर नीलाद्रि भट्टाचार्य, इतिहास अध्ययन केंद्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली की विशेष आभारी हैं। इस पाठ्यपुस्तक के निर्माण में कई शिक्षकों ने योगदान दिया; इस योगदान को संभव बनाने के लिए हम उनके प्राचार्यों के आभारी हैं। हम उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री और सहयोगियों की मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया। हम माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग, मानव

संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रोफ़ेसर मृणाल मीरी एवं प्रोफ़ेसर जी.पी. देशपांडे की अध्यक्षता में गठित निगरानी समिति (मॉनिटरिंग कमेटी) के सदस्यों को अपना मूल्यवान समय और सहयोग देने के लिए धन्यवाद देते हैं। व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के प्रति समर्पित एन.सी.ई.आर.टी. टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी जिनसे भावी संशोधनों में मदद ली जा सके।

नयी दिल्ली
20 नवंबर 2006

निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान
और प्रशिक्षण परिषद्

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान पाठ्यपुस्तक सलाहकार समिति

हरि वासुदेवन, प्रोफेसर, इतिहास विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता

मुख्य सलाहकार

नीलाद्रि भट्टाचार्य, प्रोफेसर, इतिहास अध्ययन केंद्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली (अध्याय 5)

सदस्य

उदय कुमार, प्रोफेसर, समाज विज्ञान अध्ययन केंद्र, कोलकाता (अध्याय 8)

जी. बालाचंद्रन, प्रोफेसर, ग्रेजुएट इंस्टीट्यूट ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज़, जिनेवा (अध्याय 4)

जानकी नायर, प्रोफेसर, समाज विज्ञान अध्ययन केंद्र, कोलकाता (अध्याय 6)

तनिका सरकार, प्रोफेसर, ऐतिहासिक अध्ययन केंद्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली (अध्याय 7)

पी.के. दत्ता, प्रोफेसर, समाज विज्ञान अध्ययन केंद्र, कोलकाता (अध्याय 8)

बृज तन्खा, प्रोफेसर, पूर्वी एशियाई अध्ययन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय (अध्याय 2)

मोनिका जुनेजा, प्रोफेसर, मारिया-गोएप्पेर्ट-मेयर गेस्ट प्रोफेसर, हिस्टोरिचेस सेमिनार, हनोवर विश्वविद्यालय, जर्मनी (अध्याय 1)

रेखा कृष्णन, हेड ऑफ सीनियर स्कूल, वसंत वैली स्कूल, नयी दिल्ली

रश्मि पालीवाल, एकलव्य, होशंगाबाद

शुक्ला सान्याल, रीडर, इतिहास विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता (अध्याय 1)

शेखर बंदोपाध्याय, प्रोफेसर, मानवशास्त्र एवं समाज विज्ञान संकाय, वेलिंगटन विक्टोरिया विश्वविद्यालय, न्यूजीलैंड (अध्याय 3)

हिंदी अनुवाद

योगेंद्र दत्त, सराय-सी.एस.डी.एस., दिल्ली (अध्याय 2, 3, 4, 5, 6)

रविकान्त, सराय-सी.एस.डी.एस., दिल्ली (अध्याय 7, 8)

संजय शर्मा, रीडर, ज़ाकिर हुसैन कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय (अध्याय 1)

सदस्य-समन्वयक

किरण देवेंद्र, प्रोफेसर, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक ¹[संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य] बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय,

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की स्वतंत्रता,

प्रतिष्ठा और अवसर की समता

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और ²[राष्ट्र की एकता

और अखंडता] सुनिश्चित करने वाली बंधुता

बढ़ाने के लिए

दृढसंकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. को एतद्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) "प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य" के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) "राष्ट्र की एकता" के स्थान पर प्रतिस्थापित।

आभार

यह पुस्तक बहुत सारे इतिहासकारों, शिक्षकों और शिक्षाविदों की मिली-जुली कोशिशों का नतीजा है। हर अध्याय के लेखन, चर्चा और संशोधन में महीनों का समय लगा है। हम उन सभी के प्रति आभार प्रकट करना चाहते हैं जिन्होंने इन प्रक्रियाओं में हिस्सा लिया।

इस पुस्तक के अध्यायों को बहुत सारे लोगों ने पढ़ा है और महत्वपूर्ण बिंदुओं पर अपनी सलाह व मदद दी है। हम निगरानी समिति के सदस्यों को खासतौर से धन्यवाद देना चाहते हैं जिन्होंने अध्यायों के शुरुआती मसौदे पर टिप्पणियाँ दीं। कुमकुम रॉय ने पाठ में कई संशोधन सुझाए, जी. अरुणिमा, गौतम भद्रा, सुप्रिया चौधरी, जयंती चट्टोपाध्याय, संगीता राज, संबुद्ध सेन, लक्ष्मी सुब्रमण्यम, ए.आर. वेंकटचलपति, टी.आर. रमेश बाएरी, सी.एस. वेंकटेश्वरन और शहाना ने अध्याय 8 में मदद दी। पुरुषोत्तम अग्रवाल ने हिंदी उपन्यास वाला हिस्सा लिखने में मदद दी। न्युन क्वाँच आन्ह ने अध्याय 3 के लिए वियतनामी पाठों के अनुवादों में मदद दी।

बहुत सारे संस्थानों और व्यक्तियों की उदार सहायता के बिना इस किताब को इतना आकर्षक और पठनीय नहीं बनाया जा सकता था। हम इन सभी के आभारी हैं : दि लाइब्रेरी ऑफ़ कांग्रेस प्रिंट्स एंड फोटोग्राफ्स डिवीजन; रबीन्द्र भवन फोटो आर्काइवज़, विश्वभारती विश्वविद्यालय, शांतिनिकेतन; फोटो आर्काइवज़, अमेरिकी दूतावास, नयी दिल्ली; इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नयी दिल्ली; नेशनल मैनुस्क्रिप्ट मिशन लाइब्रेरी, नयी दिल्ली; सेंटर फॉर स्टडीज़ इन सोशल साइंसेज़, कोलकाता; आशुतोष कलेक्शन ऑफ़ दि नेशनल लाइब्रेरी, कोलकाता; रोजा मुथैया रिसर्च लाइब्रेरी ट्रस्ट, चेन्नई; इंडिया कलेक्शन, इंडिया इंटरनेशनल सेंटर; आर्काइवज़ ऑफ़ इंडियन लेबर, वी.वी. गिरी नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ़ लेबर, नयी दिल्ली; फोटो आर्काइवज़, यूनिवर्सिटी ऑफ़ वेस्ट इंडीज़, त्रिनिदाद। ज्योतिन्द्र एवं जटा जैन ने सिविक आर्काइवज़ में सुरक्षित चित्रों के अपने विशाल भंडार को देखने का हमें भरपूर मौका दिया; पार्थिव शाह ने अपने संग्रह से कई चित्र उपलब्ध कराए। प्रभु महापात्रा ने गिरमिटिया मजदूरों के चित्र दिए; मुज़फ़्फ़र आलम ने शिकागो लाइब्रेरी से सामग्री उपलब्ध कराई; प्रतीक चक्रवर्ती ने केंट विश्वविद्यालय लाइब्रेरी से तस्वीरों को स्कैन करके भिजवाया; अनीश वनायक एवं पार्थ शिल ने दिल्ली में फोटो अनुसंधान किया।

परिषद् की ओर से ऋतु शर्मा, सरिता किमोठी, डी.टी.पी. ऑपरेंटर; मनोज मोहन, यतेन्द्र कुमार यादव, कॉपी एडिटर ने अपना पूर्ण योगदान दिया। इतने कम समय में काम पूरा कर देने और पूरी परियोजना में इतनी दिलचस्पी लेने के लिए हम सभी साथियों के प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

हमने इस पुस्तक से जुड़े सभी लोगों के प्रति आभार व्यक्त करने का प्रयास किया है। अगर किसी का नाम भूलवश छूट गया हो तो हम उनसे क्षमा चाहते हैं।

फोटोग्राफ्स एवं तसवीरें

हम निम्नलिखित के प्रति आभार व्यक्त करना चाहते हैं—

संस्थान एवं फोटो आर्काइव्स

आर्काइव ऑफ़ इंडियन लेबर, वी.वी. गिरी नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ़ लेबर (V : 18, 19)
आशुतोष कलेक्शन ऑफ़ द नेशनल लाइब्रेरी, कोलकाता
कलेक्शन ज्योतिन्द्र एवं जटा जैन, सिविक आर्काइव्स (III : 11, 13, 14; V : 25, 26क, 26ख; VII : 17)
कल्चरल हेरिटेज एडमिनिस्ट्रेशन (सी.एच.ए.) चेओंगजू एरली प्रिंटिंग म्यूज़ियम, रिपब्लिक ऑफ़ कोरिया
लाइब्रेरी ऑफ़ कांग्रेस प्रिंट्स एंड फोटोग्राफी डिवीजन (IV : 20; VII : 40)
मैनुस्क्रिप्ट मिशन कलेक्शन (VII : 14, 15, 16)
फोटो आर्काइव, अमेरिकन लाइब्रेरी, नयी दिल्ली (IV : 21, 23)
फोटो आर्काइव्स, यूनिवर्सिटी ऑफ़ वेस्ट इंडीज़, त्रिनिदाद (IV : 14, 15, 16)
पब्लिकेशन डिवीजन, सूचना (अध्याय III के फोटोग्राफ्स के लिए तसवीरें)
रोजा मुथैया रिसर्च लाइब्रेरी ट्रस्ट, चेन्नई
साहित्य अकादेमी, कोलकाता (अध्याय VIII के लिए अनेक तसवीरें)
संगम पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद (अध्याय VIII : 177, उमराव जान अदा का आवरण चित्र)

जर्नल्स

दि इलस्ट्रेटेड लंदन न्यूज़ (IV : 4, 6, 7, 8, 9, 11, 12, 13; V : 4, 5, 6, 8, 12; VI : 2, 7, 9, 10, 11, 12)
इलस्ट्रेटेड टाइम्स (V : 12)
इंडियन शारिवारी (VII : 18)
ग्राफ़िक (IV : 13)

पुस्तकें

ब्रेमन, जॉन एवं पार्थिव शाह, वर्किंग द मिल नो मोर (V : 21)
द्विवेदी, शारदा एवं राहुल मेहरोत्रा, बॉम्बे : द सिटी विदिन (III : 1; VI : 16, 18, 22)
इवेन्सन, नॉर्मा, द इंडियन मेट्रोपोलिस : अ व्यू टुवर्ड द वेस्ट (VI : 19, 20, 21, 23)
गोस्वामी, बी.एन., द वर्ड इज़ सेक्रेड; सेक्रेड इज़ द वर्ड (VII : 14, 15, 16)
चौधरी, के.एन., ट्रेड एंड सिविलाइज़ेशन इन दि इंडियन ओशियन (अध्याय IV में मानचित्र)
हॉल, प्रिंटर्स, सिटीज़ ऑफ़ टुमारो : एन इंटेलेक्चुअल हिस्ट्री ऑफ़ अर्बन प्लानिंग एंड डिज़ाइन इन द ट्वन्टिथ सेंचुरी (VI : 6)
हारवर्ड, डेविड, पेरिस : कैपिटल ऑफ़ मॉडरनिटी (VI : 15)
जॉस, जी. एस., आउटकास्ट लंदन : ए स्टडी इन द रिलेशनशिप बिटविन क्लासेज़ इन विक्टोरियन सोसायटी (VI : 13)
कारनो, स्टेनली, वियतनाम : ए हिस्ट्री (III : 10, 11, 13, 15, 17, 20)
रूहे, पीटर, गांधी (III : 2, 3, 5, 8)
सिन्नेट, रिचर्ड, फ्लेश एंड स्टोन : द बॉडी एंड द सिटी इन वेस्टर्न सिविलाइज़ेशन (VI : 1, 14)
द गोल्डन शू : बिल्डिंग सिंगापुर फाइनेंशियल डिस्ट्रिक्ट (VI : 24)

परिचय

हम एक ऐसी दुनिया में रहते हैं जहाँ राष्ट्रों की उपस्थिति स्वाभाविक मान ली गई है। हम लोगों को राष्ट्रों से जुड़ा हुआ, एक राष्ट्रीयता का हिस्सा मानकर चलते हैं। हम मानकर चलते हैं कि यह जुड़ाव आदिकाल से चला आ रहा है। हम देशों और राष्ट्रों को एक ही मानते हैं। दोनों शब्दों को पर्यायवाची की तरह देखते हैं। हम देशों को ऐसे एकीकृत भूक्षेत्रों के रूप में देखते हैं जिनकी एक निश्चित अंतर्राष्ट्रीय सीमा, एक सुपरिभाषित भूभाग, एक राष्ट्रीय भाषा और एक केंद्रीय सरकार होती है।

लेकिन अगर हम टाइम कैप्सूल में बैठकर अठारहवीं सदी के मध्य में जा पहुँचें और ऐसे राष्ट्रों को खोजने की कोशिश करें जैसे आज हमें दिखाई देते हैं तो वे हमें नहीं दिखेंगे। अगर हम लोगों से उनकी राष्ट्रीयता के बारे में पूछेंगे, उनकी राष्ट्रीय पहचान के बारे में पूछेंगे तो वे हमारे सवाल को समझ भी नहीं पाएँगे। दरअसल उस समय राष्ट्र अपने आधुनिक रूप में नहीं थे। लोग राजतंत्रों, छोटे-छोटे राज्यों, रियासतों, रजवाड़ों में रहते थे न कि राष्ट्रों में। प्रसिद्ध इतिहासकार एरिक हॉब्सबॉम ने एक बार कहा था कि आधुनिक राष्ट्रों का सबसे बेजोड़ पहलू उनकी आधुनिकता में निहित है। जी हाँ, इसके अस्तित्व का इतिहास 250 साल से पुराना नहीं है।

आधुनिक राष्ट्र किस तरह अस्तित्व में आया? किस तरह लोग खुद को एक राष्ट्र से जुड़ा हुआ मानने लगे?

एक राष्ट्र से जुड़ाव का भाव एक समय के बाद ही विकसित हुआ था। इस पुस्तक के पहले तीन अध्यायों (खंड 1) में इसी इतिहास को समझने की कोशिश की गई है। यहाँ आप देखेंगे कि किस तरह यूरोप में राष्ट्रवाद का विचार उपजा, किस तरह भूभागों को एकजुट किया गया और राष्ट्रीय सरकारें बनाई गईं। यह दशकों तक चलने वाली प्रक्रिया थी जिसमें बहुत सारे युद्ध और क्रांतियाँ हुईं, बहुत सारे वैचारिक संघर्ष और राजनीतिक टकराव हुए। यूरोप की चर्चा (अध्याय 1) से हम अपना ध्यान इंडो-चाइना और भारत में राष्ट्रवाद के विकास पर केंद्रित करेंगे। इन दोनों क्षेत्रों में राष्ट्रवाद का स्वरूप उपनिवेशवाद तथा साम्राज्यवाद विरोधी आंदोलनों से तय हुआ था। लेकिन इन देशों के राष्ट्रवादी आंदोलनों के रूप भी बहुत अलग-अलग थे। अध्याय 2 और 3 से आपको यह समझने में मदद मिलेगी कि किस प्रकार औपनिवेशिक देशों में राष्ट्रवाद नाना प्रकार से अस्तित्व में आ सकता है, वहाँ बिल्कुल अलग-अलग किस्म के आदर्शों का महिमामंडन हो सकता है और उन्हें अलग-अलग प्रकार की संघर्ष पद्धतियों के लिए प्रयोग किया जा सकता है।

इन अध्यायों में राष्ट्रवाद की कहानी कई स्तरों पर आगे बढ़ेगी। इसमें आपको ज्युसेपे मेत्सिनी, हो ची मिन्ह और महात्मा गांधी जैसे महान नेताओं के बारे में पढ़ने को मिलेगा। राष्ट्रवाद को हम केवल महत्वपूर्ण नेताओं के शब्दों और कृत्यों तथा उनके नेतृत्व में घटी बड़ी व नाटकीय घटनाओं के जरिए नहीं समझ सकते। हमें आम लोगों की आकांक्षाओं और गतिविधियों को भी देखना होगा। देखना होगा कि दैनिक जीवन की छोटी-छोटी घटनाओं में राष्ट्रवाद किस तरह अभिव्यक्त होता है और वह प्रत्यक्षतः भिन्न एवं असंबद्ध सामाजिक आंदोलनों से निर्धारित होता है। राष्ट्रवाद कैसे फैलता है, यह समझने के लिए हमें न केवल यह जानना पड़ेगा कि नेता क्या कहते थे बल्कि यह भी समझना होगा कि लोग उनके शब्दों को कैसे समझते व अपनाते थे। अगर हम इस बारे में जानना चाहते हैं कि लोग कैसे एक राष्ट्र के साथ जुड़कर देखने लगे तो हमें उस प्रक्रिया की महत्वपूर्ण राजनीतिक घटनाओं को ही नहीं बल्कि इसको भी समझना होगा कि राष्ट्रवादी भावनाओं को कला व साहित्य, गीत और कथाओं के जरिए कलाकारों और लेखकों ने किस तरह पोसा था।

भाग II में हम अर्थव्यवस्थाओं और आजीविकाओं पर विचार करेंगे। पिछले साल आपने चरवाहों, वनवासियों और काश्तकारों के बारे में पढ़ा था जिन्हें बीते जमाने के अवशेषों की तरह देखा जाता है

जबकि वास्तव में वे इसी आधुनिक दुनिया का हिस्सा हैं जिसमें हम रहते हैं। इस साल हम उन घटनाओं पर विचार करेंगे जिन्हें आधुनिकता का प्रतीक माना जाता है – वैश्वीकरण, औद्योगीकरण और शहरीकरण। इस भाग में हम इन बदलावों के इतिहास के विविध आयामों की पड़ताल करेंगे।

अध्याय 4 में आप देखेंगे कि किस तरह भूमंडलीकृत विश्व एक लंबे और जटिल इतिहास से उपजा है। प्राचीन काल से ही तीर्थयात्री, व्यापारी, मुसाफिर अपने साथ सामानों, जानकारीयों और दक्षताओं को लिए दूर-दूर तक जाते रहे हैं। उन्होंने विभिन्न समाजों को इस प्रकार एक-दूसरे से जोड़ा है कि अकसर उनके अंतर्विरोधी परिणाम भी सामने आए हैं। खाने की चीजें और पौधों की प्रजातियाँ एक इलाके से दूसरे इलाके में जा पहुँचीं, सूचना और स्वाद बदल गए और बीमारी व मौत का दायरा भी फैल गया। जब पश्चिमी ताकतें 'सभ्यता' का झंडा लिए अफ्रीका के दूर-दूर इलाकों में जा रही थीं, वहाँ की बेशकीमती धातुओं और दासों को यूरोप और अमेरिका ले जाया जा रहा था। जब वैश्विक बाजार के लिए कैरीबियाई द्वीप समूह के बागानों में कॉफी और गन्ने की खेती की जा रही थी तो इन बागानों के लिए भारत और चीन गिरमिटिया मजदूर भेजे जा रहे थे।

अध्याय 6 दुनिया के विभिन्न भागों में शहरों के विकास के विविध पहलुओं पर केंद्रित है। बड़े शहरों की तरक्की से मंत्रमुग्ध सैलानियों को अकसर वहाँ की इमारतें और पुल, सड़कें और नयी-नयी गाड़ियाँ, एवं चकाचौंध भरी दुकानों की कतारें ही दिखाई दे पाती हैं। शहर ऐसी जगह दिखाई देते हैं जहाँ व्यापार और उद्योग फैल रहे हैं, लोग काम की तलाश में आ रहे हैं और रोज़गार के अवसर पैदा हो रहे हैं। लेकिन विकास के इस इतिहास को देखते हुए हमें उन लोगों की ज़िंदगी को नहीं भूलना चाहिए जिन्हें काम नहीं मिला या जो सड़कों पर रेहड़ी-पटरी लगाकर काम चलाते हैं, कामचलाऊ झोंपड़पट्टियों, भीड़ भरे मकानों में रहते हैं। अध्याय 6 शहर के अनुभवों के बहुत सारे परस्पर विरोधी पहलुओं को सामने लाता है।

खंड III में आप मुद्रण संस्कृति और उपन्यास के इतिहासों को पढ़ेंगे। छपी हुई चीजों से घिरे हुए हम लोगों को यह कल्पना करना भी मुश्किल दिखाई पड़ सकता है कि एक जमाने में प्रिंटिंग जैसी चीज़ होती ही नहीं थी। अध्याय 7 में इस बात पर विचार किया गया है कि किस तरह समकालीन दुनिया का इतिहास छपाई तकनीक के विकास के साथ अभिन्न रूप से जुड़ा रहा है। वहाँ आप देखेंगे कि छपाई ने सूचनाओं और विचारों, बहसों और चर्चाओं, विज्ञापन और प्रचार तथा नाना प्रकार के नए साहित्य के प्रसार को किस तरह संभव बनाया है। उदाहरण के लिए, उपन्यास केवल इसीलिए लोकप्रिय हुआ क्योंकि उसे छापकर बहुत बड़ी संख्या में बेचा जा सकता था। क्योंकि उपन्यासों को बहुत सारे लोग पढ़ने लगे थे इसलिए उन्होंने लोगों के दिलोदिमाग को प्रभावित किया, उनकी पहचानों और व्यवहारों को तय किया और वे अपने समय की संस्कृति व राजनीति से जुड़ गए। हम इस बात पर अकसर ध्यान नहीं देते कि दुनिया के बारे में हमारा नज़रिया इस बात से किस कदर तय होता है कि हम क्या पढ़ते हैं।

जब हम रोज़मर्रा ज़िंदगी के ऐसे विषयों पर चर्चा करते हैं तो हम इस बात को समझने लगते हैं कि दुनिया की मामूली चीज़ों को समझने में भी इतिहास कितना मददगार हो सकता है।

आपने पिछले साल इतिहास की जो पुस्तक पढ़ी उसी की तर्ज़ पर *भारत और समकालीन विश्व-II* में भी तीन खंडों में आठ अध्याय दिए गए हैं। आपको इनमें से केवल 5 अध्याय पढ़ने होंगे : खंड I और II से दो-दो अध्याय तथा खंड III से एक अध्याय।

नीलादि भट्टाचार्य

मुख्य सलाहकार

इतिहास

विषय सूची

आमुख

iii

परिचय

ix

खण्ड I : घटनाएँ और प्रक्रियाएँ

1. यूरोप में राष्ट्रवाद का उदय

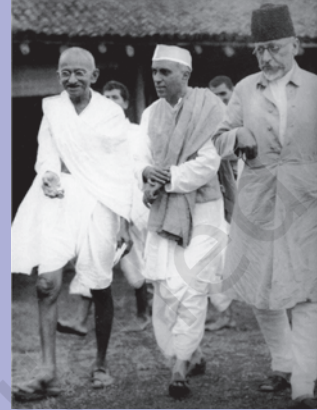
3

2. इंडो-चाइना में राष्ट्रवादी आंदोलन

29

3. भारत में राष्ट्रवाद

53



खण्ड II : जीविका, अर्थव्यवस्था एवं समाज

4. भूमंडलीकृत विश्व का बनना

77

5. औद्योगीकरण का युग

103

6. काम, आराम और जीवन

127

खण्ड III : रोज़ाना की ज़िंदगी, संस्कृति और राजनीति

7. मुद्रण संस्कृति और आधुनिक दुनिया

153

8. उपन्यास, समाज और इतिहास

177

